ऐसा असाधारण चिकना मानव भेजा

यहां जो चित्र दिया गया है यदि आप यह जान लेंगे कि वह किस चीज़ का है, तो चौंके बिना नहीं रहेंगे। यह चित्र एक मानव भेजे का है जो एकदम चिकना है - इस पर न तो कोई धारियां हैं और न ही झुर्रियां जो मानव के इस अत्यंत पेचीदा अंग की पहचान हैं।

इस भेजे के बार हम ज़्यादा कुछ नहीं जानते। हम तो यह भी नहीं जानते कि यह पुरुष का है या स्त्री का। जो कुछ हम जानते हैं वह यह है - इस भेजे का/की मालिक आजकल नॉर्थ टेक्सास सरकारी अस्पताल कहे जाने वाले अस्पताल में था/थी और उसकी मृत्यु 1970 में हुई थी। नॉर्थ टेक्सास सरकारी अस्पताल एक मानसिक स्वास्थ्य संस्था है। यह भेजा एक मर्तबान में रखा है और उस पर एक संदर्भ क्रमांक लिखा है। मगर वह माइक्रोफिल्म खो गई है जिस पर इस मरीज़ के बारे में जानकारी थी।

दरअसल, ऑस्टिन के टेक्सास विश्वविद्यालय में कोई 100 भेजे संग्रहालय में रखे हैं। फोटोग्राफर एडम वूर्हेस ने साल भर तक कोशिश की कि इस चिकने भेजे के बारे में कुछ जानकारी मिल जाए, मगर होती तो मिलती। मर्तबान पर जो लेबल लगा है, उस पर लिखा है कि इस मरीज़ को एगायरिया नामक रोग था। इसे लिसेनसिफेली भी कहते हैं। यह बहुत बिरली स्थिति है और इसमें भेजे की सतह पर धारियां और झुर्रियां नहीं बन पातीं। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति मांसपेशियों में ऐंठन, मिर्गी के दौरों और सीखने सम्बंधी कई दिक्कतों का सामना करता है। इस स्थिति में प्रायः व्यक्ति की मृत्यु 10 साल की उम्र से पहले ही हो जाती है।

यह स्थिति कितनी दुर्लभ है इसका पता इसी बात से चलता है कि इम्पीरियल कॉलेज लंदन के ब्रेन बैंक के संचालक डेविड डेक्स्टर कहते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में ऐसा भेजा नहीं देखा। एकाध धारी या एकाध झुर्री का न होना तो देखने में आता है मगर भेजे की सतह पूरी तरह चिकनी हो, यह ऐसे व्यक्ति में नज़र नहीं आएगा जो काफी अधिक उम्र में जाकर मरा हो। मगर इस नमूने को देखकर लगता है कि भेजा काफी अनुकूलन की क्षमता रखता है।

अभी टेक्सास विश्वविद्यालय में इस भेजे का अध्ययन एमआरआई की मदद से किया जा रहा है। उससे काफी कुछ पता चलने की उम्मीद है मगर उस व्यक्ति का जीवन और स्वास्थ्य सदैव एक रहस्य ही रहेंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***